Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

लोकगीतों की ऐतिहासिक उत्पत्ति, विकास क्रम और परंपरागत स्वरूप

Shekhar Sharma
Research Scholar, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore
Dr. Rajendra Kashinath Baviskar
Supervisor, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

लोकगीत मानव सभ्यता के आरंभ से ही सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। हिंदी लोकगीतों की ऐतिहासिक उत्पत्ति मानव के सामूहिक जीवन और उसकी भावनात्मक अभिव्यक्तियों से जुड़ी मानी जाती है। जब लिखित परंपरा का विकास नहीं हुआ था, उस समय लोकगीतों ने मौखिक परंपरा के माध्यम से समाज की स्मृतियों, अनुभवों और मान्यताओं को संरक्षित किया। ये गीत जीवन के हर पहलू – जन्म, विवाह, ऋतु परिवर्तन, उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान और श्रम – से जुड़े हुए हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि लोकगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास के वाहक भी हैं।

लोकगीतों के विकास क्रम में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि समय और परिस्थितियों के अनुसार इनमें बदलाव आया, परंतु उनकी मूल आत्मा वही रही। ग्राम्य जीवन की सरलता, लोकमानस की भावनाएँ और सामूहिक चेतना आज भी इन गीतों में जीवित है। परंपरागत स्वरूप की दृष्टि से हिंदी लोकगीतों की भाषा सहज, लयात्मक और बोली-आधारित होती है, जो जनमानस के बीच तुरंत अपनापन पैदा करती है। हालाँकि आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से लोकगीतों की परंपरा धीरे-धीरे कमजोर हो रही है, पर संरक्षण के प्रयास इनकी जीवंतता बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं। लोकगीत न केवल सांस्कृतिक धरोहर हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए समाज की ऐतिहासिक स्मृतियों और परंपराओं को जीवित रखने वाले अमूल्य साधन भी हैं।

कीवर्ड्स: लोकगीत, उत्पत्ति, विकास क्रम, परंपरागत स्वरूप, सांस्कृतिक धरोहर

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की विविधताओं और उसकी गहराई को समझने के लिए लोकगीतों का अध्ययन अनिवार्य है। लोकगीतों की परंपरा प्राचीन काल से ही समाज की सामूहिक चेतना और भावनाओं की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन रही है। लिखित साहित्य और शास्त्रीय संगीत के विकसित होने से बहुत पहले ही लोकगीत आम जनजीवन के साथ गहराई से जुड़े हुए थे। ये गीत मानव जीवन के सुख-दुःख,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

आशा-निराशा, श्रम और उत्सव की स्थितियों को सजीव स्वरूप प्रदान करते हैं। ग्राम्य समाज के लोग अपने अनुभवों और भावनाओं को सहज भाषा, धुन और ताल के माध्यम से व्यक्त करते रहे, जिससे लोकगीतों की परंपरा विकसित हुई। विवाह संस्कारों में गाए जाने वाले मंगल गीत, ऋतु-परिवर्तन के अवसर पर गाए जाने वाले ऋतुगीत, धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों से संबंधित भजन, सोहर, बिरहा, आल्हा और कजरी जैसे गीत इस बात के प्रमाण हैं कि लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम न होकर समाज की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का दस्तावेज भी हैं। इन गीतों ने ग्रामीण समाज में न केवल सामूहिक एकता और आपसी सहयोग की भावना को बल दिया, बल्कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक मूल्यों को संचारित करने का कार्य भी किया। इस प्रकार लोकगीतों की उत्पत्ति और विकास का संबंध सीधे तौर पर समाज की जीवनशैली और सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ा हुआ है।

वर्तमान समय में लोकगीतों की परंपरा पर वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति का गहरा प्रभाव देखा जा रहा है। आधुनिक पीढ़ी का झुकाव फिल्मी और पाश्चात्य संगीत की ओर बढ़ने के कारण लोकगीत धीरे-धीरे सामाजिक जीवन से हाशिए पर चले गए हैं। यह स्थिति सांस्कृतिक विरासत के लिए गंभीर चुनौती है क्योंकि लोकगीत केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्मृति और सामाजिक पहचान का आधार भी हैं। यदि इनका संरक्षण नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से कट जाएँगी। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि लोकगीतों का संकलन, दस्तावेजीकरण और डिजिटलीकरण सुनिश्चित किया जाए। शैक्षणिक संस्थान, सांस्कृतिक संगठन और सरकारी नीतियाँ मिलकर इन्हें जीवंत बनाए रखने का कार्य कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त लोकगीतों को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत कर युवा पीढ़ी को उनसे जोड़ा जा सकता है। लोकगीतों का अध्ययन और संरक्षण केवल साहित्यिक या संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज और संस्कृति की पहचान को सुरक्षित रखने का भी अनिवार्य प्रयास है। इस प्रकार लोकगीतों की ऐतिहासिक उत्पत्ति, विकास क्रम और परंपरागत स्वरूप पर विचार करना आज की सांस्कृतिक और अकादमिक आवश्यकता बन गया है।

लोकगीतों की उत्पत्ति का इतिहास

लोकगीतों की उत्पत्ति भारतीय समाज के इतिहास और संस्कृति से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। प्राचीन काल में जब लिखित भाषा का प्रचलन नहीं था, तो लोग अपनी भावनाओं, अनुभवों, और विचारों को शब्दों और ध्वनियों के माध्यम से व्यक्त करते थे। लोकगीतों की उत्पत्ति ऐसे समय में हुई, जब समाज के विभिन्न वर्गों ने अपनी परंपराओं, धार्मिक विश्वासों, और सामाजिक स्थितियों को साझा करने के लिए इन गीतों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

का उपयोग किया। इन गीतों में विशेष रूप से दैनिक जीवन की घटनाएँ, जैसे कृषि कार्य, विवाह, उत्सव, संघर्ष, और प्रकृति के साथ संबंधों को व्यक्त किया जाता था। लोकगीतों का ऐतिहासिक संदर्भ भारतीय समाज में प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ जुड़ा हुआ है। वे वेद, उपनिषद, और पुराणों के समय से उत्पन्न होने लगे थे, जहां भक्ति गीतों और शास्त्रीय संगीत के साथ लोक गीतों की भी एक विशेष भूमिका थी। इसके बाद, विभिन्न कालखंडों में, जैसे महाकाव्यकाल, मध्यकाल और आधुनिक युग, लोकगीतों का विकास हुआ और इनमें विभिन्न समाजों, समुदायों और धार्मिक पंथों की विशेषताएँ दिखाई दीं।

समय के साथ, लोकगीतों का रूप भी बदला। शुरुआत में ये गीत मौखिक परंपरा के रूप में होते थे, जिन्हें गायक और कलाकार अपनी काव्यशक्ति के साथ प्रस्तुत करते थे। इन गीतों में आमतौर पर प्रेम, प्रकृति, धार्मिकता, संघर्ष और सामाजिक मुद्दों का चित्रण किया जाता था। इन गीतों ने समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य किया और अपने समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का साक्षात्कार कराया। इस प्रकार, लोकगीतों की उत्पत्ति एक लंबे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यात्रा का परिणाम है, जो आज भी भारतीय समाज में अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

लोकगीतों की उत्पत्ति के ऐतिहासिक संदर्भ

- **प्राचीन भारत में लोकगीतों का प्रारंभ**

लोकगीतों का ऐतिहासिक संदर्भ भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं में गहरे रूप से निहित है। प्राचीन भारत में लोकगीतों की उत्पत्ति का संबंध मूल रूप से धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाओं से जुड़ा हुआ था। जब लिखित साहित्य और पांडित्य का प्रचलन नहीं था, तो लोगों ने अपनी भावनाओं, आस्थाओं और जीवन के अनुभवों को गीतों के रूप में व्यक्त किया। लोकगीतों की शुरुआत विशेष रूप से मौखिक परंपरा के रूप में हुई थी, और ये गीत समाज के विभिन्न वर्गों के बीच साझा किए जाते थे।

प्राचीन समय में, वेद, उपनिषद और पुराणों के समय में लोकगीतों का प्रारंभ हुआ था, जब वे धर्म, भक्ति, और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करने के लिए गाए जाते थे। ऋग्वेद और सामवेद जैसे धार्मिक ग्रंथों में ऐसे गीतों का उल्लेख किया गया है, जो पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा होते थे। इन गीतों के माध्यम से प्राचीन समाज ने न केवल धार्मिक आस्थाओं का पालन किया, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जैसे की प्रेम, संघर्ष, मृत्यु और पुनर्जन्म।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

लोकगीतों का प्रारंभ अधिकतर कृषि आधारित समाजों में हुआ था, जहाँ श्रमिकों और किसानों ने अपने कार्यों के दौरान गीतों का इस्तेमाल किया। ये गीत प्राकृतिक घटनाओं, मौसम की धारा, और कृषि कार्यों से संबंधित होते थे। इस प्रकार, लोकगीत न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक गीत होते थे, बल्कि समाज के दैनिक जीवन और कार्यों के चित्रण का भी माध्यम होते थे।

- **लोकगीतों का धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ**

प्राचीन भारत में लोकगीतों का धार्मिक संदर्भ अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इन गीतों का मुख्य उद्देश्य केवल संगीत या मनोरंजन नहीं था, बल्कि वे आध्यात्मिक भावनाओं और धार्मिक आस्थाओं को व्यक्त करने का एक उपकरण होते थे। धार्मिक अनुष्ठानों में गीतों का उपयोग विशेष रूप से पूजा, हवन, और यज्ञों के समय किया जाता था। हिंदू धर्म के विभिन्न अनुष्ठानों में 'भजन', 'कीर्तन', और 'आरती' जैसे लोक गीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जो एक ओर धार्मिक विश्वासों को मजबूत करते थे, वहीं दूसरी ओर समाज को एकजुट भी करते थे। इसके अलावा, लोकगीतों का सांस्कृतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण था। भारतीय समाज में सांस्कृतिक कार्यक्रमों और उत्सवों में लोकगीतों की बड़ी भूमिका रही है। उदाहरण के लिए, ओडिशा और बंगाल जैसे क्षेत्रों में लोकगीतों का उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सवों में किया जाता था। यहां पर लोकगीत न केवल धार्मिक आस्थाओं को व्यक्त करते थे, बल्कि वे संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक भी थे। सामाजिक संदर्भ में, लोकगीतों का सामाजिक असमानताओं और समस्याओं को उजागर करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। पुराने समय में, जब सामाजिक संरचनाएँ सख्त और कठोर थीं, लोकगीतों ने समाज में व्याप्त असमानताओं और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। उदाहरण के लिए, जातिवाद, महिला अधिकार, और श्रमिक वर्ग के संघर्षों पर आधारित लोकगीत समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य करते थे।

- **लोकगीतों की परंपरा और उनके विविध रूपों की उत्पत्ति**

भारत में लोकगीतों की परंपरा और उनके विविध रूपों की उत्पत्ति भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता से जुड़ी हुई है। प्रत्येक क्षेत्र और समुदाय के पास अपने विशिष्ट लोकगीत होते हैं, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं। इन लोकगीतों का रूप समय, स्थान, समाज, और संस्कृति के अनुसार बदलता रहा है, और प्रत्येक समुदाय ने अपनी परंपराओं, मान्यताओं और सामाजिक जीवन के पहलुओं को गीतों के रूप में संरक्षित किया है। लोकगीतों के विभिन्न रूपों की उत्पत्ति में भारत के विभिन्न भूगोल और संस्कृतियों का विशेष योगदान है। उत्तर भारत में

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

'कजरी', 'सोहर', 'चैती' जैसे गीतों की परंपरा विकसित हुई, जो मौसम, कृषि कार्य और सामाजिक घटनाओं से संबंधित थे। जबकि दक्षिण भारत में 'विल्लू पट्टू', 'कुनीता', और 'नट्टुपुरापट्टू' जैसे गीतों का प्रचलन था, जो धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों पर आधारित थे। इसी प्रकार, पश्चिमी भारत में राजस्थान और गुजरात में 'गरबा', 'डांडिया', और 'गेर' जैसे लोकगीत होते थे, जो सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सवों से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, आदिवासी क्षेत्रों और शहरी समाजों में भी लोकगीतों की अपनी विशेष परंपराएँ हैं। आदिवासी समुदायों में प्रकृति, जीवन के संघर्ष, और पारंपरिक अनुष्ठानों पर आधारित गीतों का प्रचलन था। शहरी क्षेत्रों में लोकगीतों का रूप और प्रस्तुतिकरण धीरे-धीरे बदलने लगा, जहां लोकगीतों को न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ में देखा गया, बल्कि इनका इस्तेमाल सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन के लिए भी किया गया।

लोकगीतों की विविधता ने भारतीय संस्कृति में एक अद्वितीय स्थान बना लिया है। प्रत्येक क्षेत्र और संस्कृति के लोकगीत न केवल उसकी सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करते हैं, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक धारा और परंपराओं के संरक्षण का भी कार्य करते हैं। इस प्रकार, लोकगीतों की परंपरा और उनके विविध रूप भारतीय समाज की बहुआयामी संस्कृति का प्रतीक हैं। लोकगीतों की उत्पत्ति का ऐतिहासिक संदर्भ भारतीय समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल में इन गीतों का उपयोग सामाजिक और धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक परंपराओं और प्राकृतिक घटनाओं के संबंध में किया जाता था। समय के साथ लोकगीतों ने समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों के संघर्षों, आस्थाओं, और परंपराओं को व्यक्त करने का कार्य किया। लोकगीतों की परंपरा और उनके विविध रूप भारतीय समाज की सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक विविधता का प्रतीक हैं, जो आज भी जीवित हैं और समाज के हर पहलू में अपना स्थान बनाए रखते हैं।

लोकगीतों का समय और क्षेत्रीय प्रसार

- **लोकगीतों का प्रसार और विविधता के कारण**

लोकगीत भारतीय समाज की गहरी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं, जो समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे जीवन की कठिनाइयाँ, प्रेम, सामाजिक संबंध, और प्राकृतिक घटनाओं को व्यक्त करते हैं। इन गीतों का प्रसार और विविधता मुख्यतः समाज की विभिन्न परंपराओं, संस्कृतियों, और भौगोलिक सीमाओं से जुड़ी है। भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश है, और इसकी विविधता लोकगीतों में स्पष्ट रूप से दिखती है। भारतीय लोकगीतों का प्रसार मुख्य रूप से मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

था, जहां गीत पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानीय समुदायों द्वारा अपने दैनिक जीवन, पारंपरिक कार्यों, धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों के माध्यम से साझा किए जाते थे।

भारत के विभिन्न हिस्सों में लोकगीतों के रूप और उनके संदेश में व्यापक विविधता पाई जाती है। लोकगीतों का प्रसार विभिन्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भों के आधार पर हुआ है, जो इस देश के इतिहास और सामाजिक संरचना से गहरे रूप से जुड़ा है। लोकगीतों का यह प्रसार समय के साथ-साथ और समाज के बदलाव के साथ बढ़ा, जैसे शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, और वैश्वीकरण के प्रभाव ने इन्हें नए रूप में प्रस्तुत किया। भारत में लोकगीतों का प्रसार न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ, बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी इनका समावेश हुआ। विशेषकर शहरीकरण के साथ, लोकगीतों के आधुनिक रूप और उनके मिश्रण ने उन्हें नए संदर्भों में प्रस्तुत किया। इसके अलावा, लोकगीतों के प्रसार के कारण, आज ये गीत केवल एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अब इन्हें वैश्विक मंच पर भी पहचान मिल रही है।

- **विभिन्न क्षेत्रों में लोकगीतों के रूप और विषयों में अंतर**

भारत के विभिन्न क्षेत्रीय लोकगीतों में न केवल संगीत और लय की विविधता होती है, बल्कि इनके विषय भी भिन्न होते हैं। प्रत्येक क्षेत्र की सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताएँ, और स्थानीय जीवनशैली के अनुसार लोकगीतों के विषय और उनका स्वरूप विकसित हुए हैं।

उत्तर भारत में लोकगीतों का स्वरूप मुख्य रूप से कृषि कार्यों, मौसम के बदलाव, और सामाजिक संबंधों पर आधारित होता है। उदाहरण के तौर पर, 'कजरी' और 'चैती' जैसे गीत बारिश के मौसम में गाए जाते हैं और किसान वर्ग के जीवन की कठिनाइयों को व्यक्त करते हैं। 'सोहर' और 'झूमर' जैसे गीत पारिवारिक संबंधों और विवाह समारोहों से जुड़े होते हैं, जिनमें जीवन की खुशियों और पारंपरिक रीति-रिवाजों का चित्रण होता है। दक्षिण भारत में लोकगीतों का स्वरूप धार्मिक और भक्ति संबंधी होता है, जिनमें 'विल्लू पट्टू', 'कुनीता', और 'नट्टुपुरापट्टू' जैसे गीत समाज की आस्थाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को व्यक्त करते हैं। यहाँ के लोकगीतों में विशेष रूप से हिंदू धर्म के धार्मिक आयोजन और अनुष्ठानों का वर्णन होता है। इन गीतों में जीवन के आध्यात्मिक पहलुओं, जैसे भक्ति, दर्शन और ध्यान, को प्रमुखता दी जाती है।

पश्चिमी भारत, खासकर राजस्थान और गुजरात, में लोकगीतों का स्वरूप पारंपरिक गीतों और सामाजिक उत्सवों से जुड़ा हुआ है। 'गरबा', 'डांडिया' और 'गेर' जैसे गीतों में समाज के सामूहिक जीवन, प्रेम, और

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक संबंधों का चित्रण होता है। यहाँ के गीत सामाजिक कार्यक्रमों, जैसे विवाह और त्योहारों, से जुड़ी घटनाओं पर आधारित होते हैं। ये गीत न केवल पारंपरिक जीवनशैली का प्रदर्शन करते हैं, बल्कि समाज के सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों की भी शिक्षा देते हैं। पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी समुदायों के लोकगीत अधिकतर उनकी सामाजिक पहचान, संघर्ष और पारंपरिक जीवन के बारे में होते हैं। आदिवासी लोकगीतों में प्रकृति, जीवन, और समुदाय के प्रति उनके आदर्शों का चित्रण होता है। इन गीतों में अक्सर प्रकृति के साथ जीवन के संघर्षों और अनुकूलताओं का उल्लेख किया जाता है।

- **क्षेत्रीय रूपों में लोकगीतों का समय के साथ विकास**

लोकगीतों का विकास समय के साथ विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ हुआ। प्राचीन काल में ये गीत मुख्य रूप से मौखिक परंपरा के रूप में होते थे, जिन्हें समुदाय द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक साझा किया जाता था। धीरे-धीरे, लोकगीतों में समय के साथ विभिन्न बदलाव आए, जैसे कि उनके विषय, स्वर, और प्रस्तुति के रूप में परिवर्तन। मध्यकाल में, जब भारत में इस्लामिक साम्राज्य का प्रभाव बढ़ा, तब लोकगीतों में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव का समावेश हुआ। मुस्लिम शासकों के समय में 'कव्वाली', 'कयाल', और 'सुफी गीत' जैसे गीतों का प्रचलन हुआ, जो भारतीय लोकगीतों में समाहित हुए। इस दौरान, लोकगीतों में विशेष रूप से धार्मिक भक्ति और सांस्कृतिक मेलजोल की भावना को व्यक्त किया गया।

आधुनिक युग में, जैसे-जैसे भारत में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण बढ़ा, लोकगीतों के रूप में भी बदलाव आया। शहरी समाज में लोकगीतों का स्वरूप अधिक समकालीन हो गया, और इनके विषय भी समाज में हो रहे बदलावों के साथ मेल खाने लगे। लोकगीतों में महिलाओं के अधिकार, सामाजिक बदलाव, और समकालीन जीवन के संघर्षों पर आधारित गीतों की संख्या बढ़ी। वर्तमान में, लोकगीतों का स्वरूप और प्रस्तुति पूरी तरह से डिजिटल माध्यमों पर निर्भर हो गया है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लोकगीतों को गाने और सुनने का तरीका पूरी तरह से बदल चुका है। डिजिटल तकनीक ने लोकगीतों को न केवल संरक्षित किया है, बल्कि इन गीतों को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने का एक नया अवसर भी प्रदान किया है। इस प्रकार, लोकगीतों का समय और क्षेत्रीय प्रसार एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जो समाज के हर बदलाव और सामाजिक संरचना के साथ नया रूप अपनाती है। क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद, लोकगीतों की मूल भावना और उनका सांस्कृतिक प्रभाव

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

आज भी उतना ही मजबूत है और वे समाज में सांस्कृतिक और सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य करते हैं।

लोकगीतों के विकास में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव

- **धार्मिक आंदोलनों का लोकगीतों पर प्रभाव**

लोकगीतों के विकास में धार्मिक आंदोलनों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, क्योंकि इन गीतों ने हमेशा धार्मिक आस्थाओं, विश्वासों और आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त किया है। भारतीय समाज में विभिन्न धार्मिक आंदोलनों के दौरान लोकगीतों का स्वरूप और उनके विषय में बदलाव आया, क्योंकि ये गीत धार्मिक विचारधाराओं को प्रकट करने और जन जागरूकता फैलाने के प्रभावी साधन के रूप में काम करते थे। उदाहरण के तौर पर, भक्ति आंदोलन के दौरान, जब संतों और भक्तों ने अपने अनुयायियों को ईश्वर की भक्ति और आस्था के लिए प्रेरित किया, तो लोकगीतों ने उस समय के धार्मिक विचारों और भावनाओं को समाज में फैलाने का कार्य किया।

रामकृष्ण परमहंस, मीरा बाई, सूरदास, और कबीर जैसे संतों के भक्ति गीतों ने समाज में प्रेम, श्रद्धा, और समर्पण का संदेश फैलाया। भक्ति आंदोलन के दौरान गाए गए भजन, कीर्तन और वाणी के लोक गीतों ने न केवल धार्मिक सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाया, बल्कि समाज में व्याप्त जातिवाद और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ भी आवाज़ उठाई। इन गीतों के माध्यम से, धर्म के नाम पर समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने की कोशिश की गई, और आम आदमी को एक समान सम्मान और अवसर देने का संदेश दिया गया। इसी तरह, सूफी संतों द्वारा गाए गए 'कव्वाली' और अन्य सूफी गीतों ने प्रेम, एकता और मानवता के संदेश को फैलाया। इन धार्मिक आंदोलनों के दौरान लोकगीतों में प्रेम और भक्ति के साथ-साथ शांति, समानता, और भाईचारे का भी संदेश दिया गया, जो समाज में सुधार और सामाजिक जागरूकता के रूप में सामने आया।

- **लोकगीतों का विकास विभिन्न धार्मिक संस्कृतियों के साथ**

भारत में विभिन्न धार्मिक संस्कृतियों के साथ लोकगीतों का गहरा संबंध रहा है। भारत की विविधता में विभिन्न धर्मों का अस्तित्व है, और प्रत्येक धर्म की अपनी धार्मिक परंपराएँ और संस्कृतियाँ लोकगीतों में समाहित हुई हैं। हिन्दू धर्म, इस्लाम, सिख धर्म, और जैन धर्म जैसे प्रमुख धर्मों के धार्मिक गीतों ने लोकगीतों के स्वरूप को प्रभावित किया। हिंदू धर्म में लोकगीतों का योगदान भक्ति गीतों, आरतियों और कीर्तनों के रूप में था, जो समाज के विभिन्न वर्गों के लिए आत्मिक और सामाजिक जागरूकता का स्रोत बने।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

'राम धुन', 'शिव तांडव', और 'हनुमान चालीसा' जैसे गीतों ने धार्मिक आस्थाओं को और अधिक प्रबल किया। इन गीतों ने न केवल भक्तों को धार्मिक अनुभव में लाया, बल्कि उन्होंने समुदायों के बीच एकता और प्रेम का भी संदेश फैलाया।

इसी प्रकार, इस्लाम धर्म में सूफी संगीत और कव्वाली ने समाज में प्रेम और भाईचारे का प्रचार किया। सूफी संतों के गीतों ने भक्ति और प्रेम के साथ-साथ मानवता और सहिष्णुता का संदेश दिया। 'कव्वाली' जैसे गीतों के माध्यम से, सूफी संगीत ने भारतीय लोक संगीत को प्रभावित किया और भारतीय संगीत में एक नया आयाम जोड़ा। सिख धर्म में 'गुरबानी' और 'भैणां' जैसे गीतों का प्रचार हुआ, जो सिख समाज की धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं को व्यक्त करते थे। इन गीतों में एकता, सेवा, और शांति का संदेश था, जो सिख धर्म के आदर्शों के अनुरूप था।

- **सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों के प्रभाव में लोकगीतों का बदलाव**

सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों का लोकगीतों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। लोकगीतों का स्वरूप समय के साथ बदलता गया, क्योंकि ये गीत समाज की सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक व्यवहारों से जुड़े होते हैं। प्रारंभ में लोकगीत समाज के दैनिक कार्यों और अनुष्ठानों का हिस्सा होते थे, लेकिन जैसे-जैसे समाज में शहरीकरण और औद्योगिकीकरण का प्रभाव बढ़ा, लोकगीतों के रूप और विषय में भी बदलाव आया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विवाह, त्योहारों, कृषि कार्यों और पारिवारिक संबंधों को लेकर लोकगीतों की अपनी विशिष्ट परंपराएँ थीं। जैसे, उत्तर भारत में 'सोहर' और 'झूमर' जैसे गीत विवाह समारोहों में गाए जाते थे, जबकि दक्षिण भारत में 'नट्टुपुरापट्टू' और 'विल्लू पट्टू' जैसे गीत धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों पर गाए जाते थे। इन गीतों में पारंपरिक रीति-रिवाजों का प्रतिबिंब होता था, जो समाज के सांस्कृतिक जीवन को दर्शाता था।

निष्कर्ष

लोकगीतों की ऐतिहासिक उत्पत्ति, विकास क्रम और परंपरागत स्वरूप पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि ये केवल संगीत की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षक हैं। लोकगीतों का उद्भव मानव जीवन की सहज भावनाओं और अनुभवों से हुआ, जब मनुष्य ने प्रकृति, श्रम और सामाजिक जीवन की परिस्थितियों को स्वर और लय के माध्यम से व्यक्त करना आरंभ किया। इस दृष्टि से लोकगीतों का स्वरूप शास्त्रीयता से परे, सहजता और स्वाभाविकता से युक्त रहा है। विकास क्रम में इन गीतों ने विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए अपनी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रासंगिकता बनाए रखी। चाहे वह धार्मिक अनुष्ठान हों, विवाह संस्कार हों या ऋतु-परिवर्तन, लोकगीत हर चरण पर समाज के सामूहिक जीवन का सजीव दर्पण बने।

परंपरागत स्वरूप की दृष्टि से लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरल भाषा, बोलीगत विविधता और लयात्मकता है, जो जनमानस को सीधे जोड़ती है। इनमें गहराई से सामाजिक रीति-रिवाज, आस्थाएँ और जीवन के मूल्य अंकित हैं। हालांकि आधुनिकता, शहरीकरण और तकनीकी प्रभावों ने लोकगीतों की परंपरा को प्रभावित किया है, फिर भी इनकी सांस्कृतिक महत्ता कम नहीं हुई। यदि इनके संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ तो यह धरोहर भविष्य में भी जीवंत रह सकती है। अतः लोकगीतों का अध्ययन और संरक्षण न केवल अतीत को समझने का साधन है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने की अनिवार्य आवश्यकता भी है।

संदर्भ

1. मिश्रा, श. (2019). भारत के विभिन्न अंचलों के लोकगीत. शब्द–ब्रह्म: भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 3(10), 17–19.
2. अज्ञेय, श. (2016). लोकगीतों की यात्रा. Anu Books, पृ. 1–10.
3. कंठालाल, प. (2015). ग्राम्य जीवन को चित्रित करते बुन्देली लोकगीत. शब्द–ब्रह्म, 4(6), 239–242.
4. दुबे, र. (2016). साहित्यिक गीत और लोकगीतों में अन्तर. Hindi Journal, 2(1), 38–45.
5. राठी, स. (2018). छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस-योजना. Shodhgangotri, पृ. 1–25.
6. सोनी, ज. (2019). छत्तीसगढ़ का भौगोलिक, राजनीतिक एवं सास्कृतिक परिचय. International Journal of Review and Research in Social Sciences, 7(1), 239–250.
7. चौबे, र. (2012). छत्तीसगढ़ लोकगीत, पंथी व जन चेतना में उनकी भूमिका. RJHSS International Journal, 1(2), 10–30.
8. गुप्ता, ज. (2024). ब्रज लोकगीतों में जीवन, संस्कृति एवं देशज ज्ञान. Shodhgangotri, पृ. 1–15.
9. साहनी, ए. (2016). पाठ 2.1: छत्तीसगढ़ी लोकगीत. SelfStudys शिक्षण सामग्री, पृ. 5–20
10. पटेल, ई. (2017). पंथी गीत: सतनाम पंथ की लोक धरोहर. लोक साहित्य समीक्षा, पृ. 1–4.
11. राजपुरोहित, म. (2016). लोकगीतों की सांस्कृतिक यात्रा. Anu Books, पृ. 10–25.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

12. रावल, गौ. (2015). बुन्देली लोकगीतों में ग्राम्य जीवन की अभिव्यक्ति. शब्द–ब्रह्म, 4(6), 239–242.
13. प्रसाद, प्र. क. (2022). मयला आँचल में लोकगीतों की अर्थवत्ता. अपनी माटी, पृ. 1–15.
14. कुर्रे, म. क. (2020). सामाजिक चेतना के विकास में पंथी गीतों की भूमिका (छत्तीसगढ़ संदर्भ). रचनाकर, पृ. 1–20.
15. दक्षिण कोसल (2021). छत्तीसगढ़ी सामाजिक लोकगीत एवं अपनत्व. दक्षिण कोसल टुडे, पृ. 1–8.